



शः लख काय का अः सिधु ल न गे य का अः धधि ज्ञा स यानिः वि च मि मि या कः न ल का स
अः धधि ग्मि सा ऊ नः य ध स स न रु ल साः ल कि उ दि क ध यः लि थ ल कि आ दि नः न क लि
स रु आ कि न दा स या क नः ज न ग स म्प र्ति ला यि आ ॥ रु न् थ श य न सः न्वा न सा र्ति म म वा श
थ ठि थ य स व का डि वा स या य ध कः ध म्पि आः ल कि अ न्वा का स ॥ **धु नि ध म्पि ल कि स म्प द**
दू नि य स ध म्पि ॥ ६ ॥ ध न लिः ल कि स नः ध म्पि स क द दा स ॥ ॥ **धु नि ध म्पि स ध म्पि क**
ध म्पि काः म नो नौ रु लाः या य द न वि द्वा का नः व द म्पि रु म द्वा म ला ॥ ल कि ध म्पि स कि न रु ना द न

यि द्वा या काः रु ल था न स नः या य द न क थ क द वि का य मा ल ध कः ल कि नः ध म्पि स क द दा स
॥ **ध म्पि स न आ रु क टा ॥ ल कि स रु क न डि न क न्वा ॥ ल कि न मि सा ऊ न रु या अः थ श य ल**
रु का थ न स या या य नः द्वा स कि क द रु ल ला ल रु नः वि क र स या या य नः या लि नि रु नः य न स य
व न न म रु स रु या या य न रु मि लि रु ल ॥ य न स अः उ कि उ उ ल नः न्वा दा या या य नः अ दि रु ला ॥ ध म
या का रु नः सा का रु द न या या य नः ध म्पि स क अ रि वा रु या अ ऊ म्पि का लं ॥ थ श य न स या व रु क अ
व या य ल रु न का लः म्पि व या य ल रु अः य रु ल ला नः म्पि व या य ल रु या कः वि रु न या नः ध धि रु

सुकर्मयादायादायनः शालाउनः लाममदयकः नासाद्वसिस्तः हलमरुयाडाः माहा २३
रुक्कमिस्तः लिख २ नानासकनायकः थअयूनसडाः जालंदमरुयकः थअयूनसयाडा
रुक्कालमदयकः संसालरुक्कः ॥ थानि नः थअयूनसयाकाः सुकर्मयायमरुडाः रुयाथः थर्म
यायमालः युर्वजर्मसयादायायनः थुगलिजर्मसः कस्यरुलः सुरुनलकि ॥ रुनमथमसि
याधका ॥ रुमिथर्मसः लकि संसालरुक्कियज ॥ ॥ रुनाथर्मसनः लकि कदासः शाल
कि सः जनिजालि रुयाडाः थर्मयायः कर्मयायः वरुविवाहालयायः मनथालसाः सुसा

मसलधकः थथअयूनसयाका उयनंगः जनमसुधका ॥ थअयूनसयाका रुक्कियादायाय
नायायराउनः थैअयूनसः मदाजानदि रुक्कः थअयूनसः जनियाकानः थअदसनयाय
रुलनानः थअयूनसः नयलदयादाना ॥ उदासनयादाया रुलनानः थानियलिमानयाय
मिसाऊनलः सामिरुक्कियादायाय नयायराउनः थअकयदि थर्मवासरुलः थनलिष्ठा
मिरुक्कसुयानिमिलिनः मदासुलितुयरुयाडाः नासावकालनकासयाडाः जनिमुन
समनंमियाः जनि लकनसमरुं थुलाडाः जनि लकनसमरुं लादा ॥ मदासु कर्मिविचका

[illegible][illegible]

इदं कथं वेनाये सादृश्यं न विगते ॥ ७ ॥ अथ लम्बनाथसंबद्धे रुग्णवर्गं न धागन कृत्वा
 जनि यन्माहृत्वा दुष्टं नारुत्तीना ॥ ८ ॥ मदिनाय तमाथय ज्ञेयं कथायमविना मा
 या जात्रा हि मेवीर्ध्वं यथावारीरुवाम्यहं ॥ ९ ॥ अहं नयं कमग्नानां कृत्वा कुर्वन् विगता हि
 माय सर्वसत्त्वानां मन्त्रं वदन्नायक यः ॥ १० ॥ अथ काशय दुर्लभं वदन्नाथ रुग्णवासात्मा रुग्णद्वारं मदा
 समयं नरकं दुष्टं यामय दित्यवा ॥ ११ ॥ रुग्णवाहानकायस्य मदाष्टौ वस्यगीयन् मेरुध्वं
 हानसत्त्वस्य हानमूलस्य यदुवा ॥ १२ ॥ गीर्वाणाथ मदावाथा मदाथ मसत्तातिवा ज्ञा

दिसन्ध्या न कल्पानि नामसंगिनिमूलमानसं ॥ १३ ॥ यामिनेरुविगावद्धे सायिद्य कृत्वा नाग
 न यत्तुल्य नाथसंबद्धाया सायवयनयना ॥ १४ ॥ मायाजार्धमहागने यावास्मिन्सत्यमि
 यम मदावज्जधं वदन्ने नमयमनुधाविति ॥ १५ ॥ अहं यं नाधावयिद्यामा निर्यानेय
 दृष्टास्ये यथासंगीवामिहं नार्थं सर्वसंबद्धं दुष्टं काधुक् ॥ १६ ॥ अथ काशयिदुसत्त्वानां य
 थासयिविहायन अथ यज्ञं सनातोय अथ वाहानदानेय ॥ १७ ॥ अथ वंमध्वं कुरुज्जुद्धो
 वज्रयामिह धागन कृत्वा जलियन्माहृत्वा युद्धकायसि नायन ॥ १८ ॥ अथ वनाग

॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥
 ॥

[illegible]

सर्वकारुणिकसुदन महाकाशमहासारवा महाभादामहावर्णि ॥ ७ ॥ महाचूया
महाकाया महावल्लु महाचिद्य महानामामहादाया महाविवलमल्लुता ॥ ८ ॥
महाप्रह्लादयूवधवा महाकुण्डलाग्रविधा महायतामहाकिहि महाहोनिम
हादनि ॥ ९ ॥ महामायाधवाविहा महासयार्थसाधक महामायावर्णिवनाम
हामायादयाविक ॥ १० ॥ महादानयानि ॥ ११ ॥ महाशीवधवाइय लीनमहाकु
निवधवाविधा महाविजयवाकम ॥ १२ ॥ महाध्यानसमाधिभा महाप्रह्लादविलस

कमहावनामहावायुनिविहानसागरा ॥ १० ॥ महामर्ममथामथा महाका
निकाइशुविमहायुः महार्वा ना महावायमहाकानि ॥ ११ ॥ महाप्राविवायम
महावल्गममहाजवनमहाद्विकामहासाखा महावचयनाकुने ॥ १२ ॥ महारु
वादि सरुका महावज्रवनाद्यन ॥ महाकृवामहावीडा महारयरुंकव ॥ १३ ॥
महाविद्यालुमानाथ ॥ महामकुलुमाशुत्र ॥ महायाननयारुडा महायाननय
हम ॥ १४ ॥ वावजुवाहुमहामलुलमथावहुदग ॥ १५ ॥ महारववावनावदा म

हामोनिमहामूनिमहामकुनयाहुना महामकुनयात्मक ॥ १६ ॥ दगयाव
मिनावाका दसयावमिनाशय ॥ दगयावमिनाशुद्धि दगयावमिनानय ॥ १७ ॥
दगहमिस्वानाथ ॥ दगहमीषुष्टिनिग ॥ दगहानविशुद्धात्मा दगहानविशुद्ध
वृ ॥ १८ ॥ दगकावादगथाथ ॥ मनिन्द्रादगवलाविरु ॥ १९ ॥ जगवविष्ठाथकवाय
गकावावगामहान् ॥ २० ॥ जनादिनीयसुखत्मा शुद्धात्मानथनात्मक ॥ २१ ॥ नवा
दीयथावादी नथाकाविजुनयवा ॥ २२ ॥ जनायाद्वयवादीव हनकाठिन्यवन्मि

[illegible]

द्याय ॥ श्री गीतु नाद नाविल ॥ ११ ॥ विद्यावननसंम्यन्नं सुगनालाकविल्यन ॥ निमैम
 निनदंकावसत्यदायनयम्वित ॥ १२ ॥ संसावयावकाटिम्ब कुल्यकनयवम्वित
 केवत्यरुनानिम्ब यरुनासनाविदावन ॥ १३ ॥ सवमावमेवानावा लाकावाककन
 यव ॥ १४ ॥ मग्धवोममेनाजा ॥ श्यामा ॥ मयदसकर ॥ १५ ॥ सिद्धाथै सिद्ध सकल्य त
 व सकल्यवजिननिविकल्य जयाधम ॥ १६ ॥ नैधायुयवावय ॥ १७ ॥ पुन्यवापूनम
 लावा ॥ हानेहनाकवमरु ॥ हानवा सदसहानी ॥ संसावदायसंहन ॥ १८ ॥ गम

अनाविशनाशाजी ध्यान (अथ विषयीन्यानि यथात्मवद्वयचय यत्र माद्यमि कायवृक्
॥ १ ॥ यत्र कायात्मकावृद्धे यंत्ररूपात्मकाविलु ॥ यंत्रवृद्धाममकुट यंत्रवृद्धचरं म
वृक् ॥ २ ॥ जनकसर्ववृद्धानां वृद्धेयुः यत्रावन ॥ यत्रावनवाहवथानि धर्मि
निरुवान ॥ ३ ॥ यत्रैकस्मात्तवावजात्मा सद्या जा नाउगल्यनि गगनाद्वस्ययु
यत्राहानाननामहाना ॥ ४ ॥ विद्यावनामहादिक रूपा नशानि विद्यावन रजगत्यादि
याहानको महानजायराखन ॥ ५ ॥ विद्यानाजायमनुकल्प मनुवाजा महायेव

नमहाध्वीवातु नानिथा विसादसि विहृत्यनि ॥ ६ ॥ सर्ववृद्धात्मरावा (अमजगदा
नेदवावन ॥ ७ ॥ विसात्रयीविद्यानाच यत्रा मा आ महाया वि ॥ ८ ॥ कलत्रयवनामकु
महासमयमनुवृक् यत्रा यवना (अमजगदा ॥ ९ ॥ नारुमदसक ॥ १० ॥ जमाद्य
या (अमजगदा ॥ ११ ॥ वज्रयो (अमहायुह ॥ १२ ॥ वज्राहु (अमहाया ॥ १३ ॥ वज्ररुचवर्तकन ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ विद्वद्वधमवातुहान सुनिगमथाययविगानि ॥ १६ ॥ कावनाद्यमरवालीम यत्रा
यत्राजादवि (अमहायुह ॥ १७ ॥ कवालककावा हवाहलसनालन ॥ १८ ॥ यमानकाविद्यनाजाव

उवग्गयंकव विद्युन्वज्जुगवजा मायावज्जाम्हादयैन ४॥ २॥ क्वित्यग्गवज्ज
थानि वज्जमदान्नयम अचलकज्जनाद्य उगयमेयगादधृक् ४॥ ३॥ लाहाकाया
महाधाया हीहीकावाहयानक अज्जुहा ॥ ४॥ महाहाहा वज्जहाहा महानव ॥
॥ ५॥ वज्जसत्त्वा महासत्त्वा वज्जवाज्जामहासुरव वज्जय ॥ ६॥ महामादा वज्जहंका नहं कर्ण
॥ ७॥ वज्जवानायुधधवा वज्जवज्जानिकुगन ॥ ८॥ विग्गवज्जधवावज्जि युक्कजिजन
जह ४॥ ९॥ वज्जहालाकवावाजा वज्जहा वाणिवाह ॥ १०॥ वज्जव ॥ ११॥ महावत्त सग

जावज्जवायन ॥ १२॥ वज्जवामाकवगन वज्जवामेकविशह वज्जकाटिनखाचहा व
ज्जवन्ननद्धनि ४॥ १३॥ वज्जमोवाधन ४॥ १४॥ मान वज्जारुन्नरु विनि लाहाह लाहा
निधाया वज्जधाव ४॥ १५॥ उज्जव ॥ १६॥ मेरुद्धारवामहानाद मेरुलाहं कववामहान ॥
ज्जाकासधुययैर्न धारवाधारवगमव ४॥ १७॥ आदग्गहनगम थायादानसाद्वदग्ग
॥ १८॥ गयगाहननवात्मा रुक्काटिननकन ४॥ १९॥ न्यगावादिदूरवहा गमिवादान
मज्जन ४॥ २०॥ वेमेसरवामहासदा धमेग ॥ २१॥ महावन ॥ २२॥ अयुगिक्किनेनिधे

ना दशादिभ्यो देदृति ४॥ २ ॥ अत्र यात्रयवानलम् ना लात्रया मना मय सवेत्रया व
 सा सश्री च सा खयति विम्वृक् ४॥ ३ ॥ अत्र वृत्ता मस्त सारव ने धातु क म द ग्य व स
 मृदि नाय मार्ग म्मा धर्म क तु म हा द व ४॥ ४ ॥ निला के क क मा वाङ् मू वि वा वृद्ध यज
 यनि द्वा नि व स कु ल व व कान नु ला क स द व ४॥ ५ ॥ ला क हान गु ला या यो ला का वा य
 वि सा द व नाथे मा ना नि वा का य स व न ना य न द व ४॥ ६ ॥ ग ग ला ग ग स ग ग स
 ह ह न सा ग व अ वि द्या लु का स सं ह सा न व य ज व दा व न ४॥ ७ ॥ स मि ना स्य र व

ग सं सा ना लु व या व ग ह न ना लि ध क म दृ ठ सं म्य क वृद्ध ल व न ४ ॥ ८ ॥ ति द् ४ र व
 द् ४ र व स म न म्ना इ न न सि म्ना कि ग स द्वा व व न नि नि म्ना क आ का स स म ना ग न ४॥
 २ ॥ स द्वा क म्ना म वा नि न य आ न ध ग नि ग न स द्वा स द्वा म हा ना ल म गु ल स व न म्ना व न
 ४॥ १ ॥ स द्वा य वि वि नि म्ना य म व ल नि श्रु ति न म हा वि ना म लि व न स द्वा व न
 मा वि ल व ४॥ २ ॥ म हा क ल्य न न्म ना म हा ल ड ध ना न म स द्वा स वा थ क हा दि न वि
 स द्वा व ल न ४॥ ३ ॥ शु रा न्म रु का व रु स म यी वि रु स द्वा डि य रु व व रु वि

[illegible]

विद्यावनायका वक्ता निर्वीनमायवान् । मूर्तिमात्राविमात्रात्म विमूर्तिः ॥ नाना
 वाया ॥ निर्वीलनिर्वृतिः ॥ १७ ॥ यो नियमि मनकः । सुखदुःखान् कृत्वा विद्या । वैना
 रूपाय विद्या ॥ १८ ॥ ज्ञया इत्यमावाका निचारी मानि च जेन ॥ निष्कान् ४ सर्व
 लमायायि ॥ १९ ॥ आवज्ज मनोसव ॥ २० ॥ ज्ञा विचक्षा विमवा वाकदाय निचामय
 यवद्वि विप्रदात्मा सर्वरूः ॥ २१ ॥ विरूपन धर्मता निना ह्यनमदाय नूय
 धृक् निविकल्पा निचाराता ॥ २२ ॥ सर्वसुद्वेकाय धृक् ॥ २३ ॥ ज्ञानादिनिर्वनाद्विज्ञा ज्ञा

यावेनाजा वृद्धविद्याविद्यामहान् वज्रमिद्वामहारावज्ञा विष्णुयवमाकुच
दृष्टवद्वदमहायान वज्रवर्मिमहायव ॥ ३ ॥ जिनिजिम्बजगंमूर्त्यो वज्रवर्षिर्वयधैवि
॥ सर्वयोचमिगायली सर्वरुमिविरु वल ॥ विरुद्वेद्वमैर्नवात्मा सम्यक्ज्ञान
दक्षत्यरु ॥ २ ॥ मायाजालमहाद्याग सर्वननुाधिययल ज्जुस्वरवज्रयय्योका नीस
वज्ञानकायधृक् ॥ ३ ॥ समनुरुदः समनि ॥ क्रिनिगरी जिगवेनि ॥ सर्वद्वेद्वमहा
गहा विष्णुनिमानयधृक् ॥ ३ ॥ सर्वरावसरावा ॥ सर्वरावसरावधृक् ॥ ३ ॥

[illegible]

धून का व दंशरति पूजा सा च क र्थेन न्नयि सम च न हि च कोः वि
 को च कोः धनय का विन म द न धि च कोः वि स ऊन ॥ व द स वि च को
 को य ॥ धन वि स म धि धून का वः क य स स म न था यि नि पू जाः
 दु शी पू जा वि धि धां धून का वः धन वि स य नि व शी स ह या व
 ली स न य थ को को द स न धन गु न म लुं व द न को ॥ वि ॥ ऊन ॥ धन
 वि स या तः प च म वा वि य सि धि दि वा स नः श्री लालि न न्नो ॥ ध ॥

श्री गणेशाय नमः

622

वृनकावः धनवर्द्धमं **ॐ** नवायकः उरुद्राश्वन २१ थनरुः **सं०॥**
नृद्यः नायः आशुतु १ वृंः लोयाद्राश्वन १ मादूतु मन्त्रद्य यावकः ॥
मथः चतुःपलं प्रादिनाथनयूजायकथं थ ॥ धनः वृयः विठ ॥
उजम ॥ स्थानः श्वनजाः सक्रायः अनाः मठः नायः आशुतुः नृका
नमूयः आशुतुः विष्टजन ॥ धनवर्द्धमं **ॐ** नृयानाशुतु ॥ धन
नृयः माता श्वयायावि स नृद्य यावक ॥ यति यरावयूजाः वृनिः चितः ॥

रुनः उजमः स्थानकायः सक्राय अनाश्वयः मठः नायकाय ॥ कृत्नाः दक
नाकायः दं २ उं नमानु नतुं नमान भाह गयीं रुत्वा नमस्यामि नृयार्थ यमिः
थय ॥ **धनकावः** धउथउथम ससदय ॥ धनमिष्टनद्राश्वनस्थानः
काश्वनवायक ॥ धननृयस्वना ॥ वाधिवजनवर्द्धनांः उथादंतमहा
महः वृथयितानाथयः सवजीदयादि ॥ म ॥ रुनाथरु नृयः वाधिवजं
नः वृथयनिर्कः गथा नृरिश्वाकविनः नृथा डि यनिर्कः नकायाययातः

स्ववजः आदिनं विद्यवि कौहं नः ॥ लोभनाः तदनुस्वदिती डमयूरैः
नानि तानि न व्यर्त्तिनः तथा गता विद्या दविपूक ॥ सिधिरिष्य काथ ॥ वृद्धानं
मरिष्यका र्त्तुं गगनायः वडिनाः कर्त्तुः अथ दं कः तर्था दतः अथ मस्यदि ॥
रुनाथः वृद्धयूत यनि नः संसा न उवाच या ययातः गुना कवनं गथा ध्वनू रि
स्वका विनः नूथं डिमि र्त्तुं नका या ययातः धनू रिस्वका वि र्त्तुं वि कौहं नः ॥
रु विचर्यं त यः लावनाः ॥ तः तथा गतः य र्त्तुं समा यनेः मदा ना ग्यनः

द्वारु र्त्तुः देवा वनः वीर्य वज्र मा गी नयः तद्वेदः दविपूक मूखाः नयवः स
निष्यं मठि गिग्नू ताः नत नं हं वडि जातः दिरु डः संय र्त्तुं काय सगवंः व
डि लूय र्त्तुं न सत्वा रिनः मरि र्त्तुं चः यून र्त्तुं मूखा दिमू र्त्तुं रिः यर्त्तुं निमू र्त्तुं
य र्त्तुं रिः तः वाचनां दि विद्या सदि नः रुतः ध्व र्त्तुं यता काः व र्त्तुं का दि नः
गी र्त्तुं य र्त्तुं कू कू मा दि वृ र्त्तुं रिः क व कि ग वः या व डि नः वा वि विः
ना मृ तः य र्त्तुं क वः क व र्त्तुं र्त्तुं रिः य र्त्तुं निः गृ त रि र्त्तुं च मानिः जा

२४३:

गिनिगनः शीयमानः मङ्गलं गीतः ॥ थन कन मः नूरि के वियः भाद सदिच
कनयः ॥ अथ ॥ उ मं गन न सत्त दिदिहि न स्यः सर्वो मकस्यः वन सर्व क
लाधिय स्यनिः एख उ न कस्यः महा सुख स्यः न मं गन न सत्त न्य न मारि स्य क ॥ २ ॥
थन यानु नूरि के वियः ॥ भाद सदिच कठयः एव नः ॥ हं उ हं ॥
कानाधिष्ठितः वज्रः जात्रायः दिदि न मं गन न सत्त किं नूतः धृष्ट स्यः
कः ॥ उ मं महा सुख व उ सत्त रिष्य कनः त्वी मरिषि सुमिः सत्त नथ गताधि

१४

तिख नट्ट उरुव ॥ थन नूरि के वियः ॥ अथ ॥ थनः उ न ग
न नूनः सख व खन हाय ॥ नूरि के वियः महा वज्र न म कृतं दयामिः
सर्व वृक्षानांः तिष्ठ नूत ॥ ह्य वय स र्व वः ॥ रुमिष्यः थः नूरि के वियः य लः
वः गथा अवसाः वज्र वधिदः सा हं मथः याना नूनः न म र्का न या
दाव नया नूः स नारुदन उयति इ स्य चाद नूः जिन नूत यनि स वि
यः ॥ उ नूरि के वियः ॥ ह्य वज्र दका रिषि सुम नूत म हं ॥ यं वय न य नूत ॥ ३ ॥

ति उँ दकारिखकविधिः॥थन अत्राखनाः॥वाधित उँ वृद्धांनाः जथ
दंत माहा मरु म मायिताननाथायः खव उँ ददादिमः॥रुनाथरु गुत्रव
धित उँ वृद्धयातः गथावित्र अथां जियनि वक्रायाय यातकयागः धमकू
तौ अत्रिखकविम्विक्काहं न॥थन लावनाः॥मिखात्रा वलं संरुतल्लयि
नः स्नानसखयिंरुतं नरु सुतथा गठः कूर्म वरिषि कुं मानत्रयव उँ दि
हि वृयनियमानं मं नै वं गीत लावयन् ॥थन मयूत नयूयक ॥०

०० दंत सर्व वृद्धांनाः गेत्तातु कंन मयूतं शर्मा कयू उँ नाथाय मयू
ठयं कूकू वारुवः॥ रुमिषायनिध मयूठयाय लोडाः गथा वा
दथा वमाः ममसं तथा गगनं गिरुवनदवनं नमास्का वयादा
डातयागुः रुमिषाः रुमिषा यजायाचकयागः धनार्थनं धमकूठ
काहं न॥धकर्मयारुवनं यं कूकू वमं उँ मं जात रुनाः॥थन मूखन
दित्रक ॥ उँ व उँ अतु सावित्रि रूषिं कूहं ॥ उँ व जिनि अरिषिं कूहं ॥
वज

यः॥ अत्र विष्णु कविरयः वज्रयात्र विष्णु क॥ धृ स मं सः वृद्ध श्रय कया नः
त्र मा वज्र का जः वज्रात्र विष्णु कः मून गत्व मरुः॥ मं ख न न दायः उं स वृ सः
ही नृ कय क्षीः आका न कू न मं रु वाः मरु दय दं या फः॥ स म सं सि य रु ना मि
व क्षी धू काः आका न कू न मंः उ य नि श्र या डा वा दः मरु अ कू न य द ना ना॥
ॐ ति वज्रात्र विष्णु कः॥ अत्र ख ना॥ वा धि व ज न वृ द्धा नां ज थ म दं त मरु
मरुः स मा यि नाः न भि थ य व ज द वा॥ हि मः॥ रु ना थ रु रु नूः वा धि

वज्र नः वृद्ध या न ग था वि नः अर्थ डि मि तः धृ चं था अत्र विष्णु क विष्णु वि ज्ञा हं
अः॥ ला ज ना॥ सि य खं का न जः ख ज्ञा य नं अ मा द्य सि धि स्त न म ली रि नः
चं था च अ मा द्य सि धि वि ला व य त्॥ अत्र विष्णु कः ला दि॥ उं वज्रा धि व ति र्वा
मरु रि वि क्षी मि ति थ व ज स म य खं हंः वज्र यं थ अत्रः गुरु ना मि म या रु ग व
न म नि स नि दि ना रु वः॥ चं थ वि यः मं ख न व न दायः॥ उं वज्र यं था रि य
क मू न ठ लं मरु॥ अत्र य न यः व भि वः मं सै व दि त वः न वृ धि न वः

वृद्धं न सत्वं तदितक ॥ अथ श्रीमदुपनिषद् श्रवः ॥ श्रीमाद्यंथः सितमद्रः व
 धिमखूः वृद्धं सलवमखूः सत्वं मखूः म्याक मखूः निवृत्त न स्यात्तां कवृत्ताहि
 न ह्यनाः नाधियः निवृत्त नायायमजिवः ॥ श्रीकावकायमजिवः ॥ ह्यननं उ
 यति श्रवः ॥ श्रीमाद्यंथः अचकः ॥ श्रीकावचंथः ॥ जसा सर्ववृद्धानां
 द्यंथाद्याखानः ॥ गमिंतार्वयायि सद्विद्यमर्थं वाधिवः ॥ गमिजिनमता ॥ अथ
 द्यंथः अद्या सद्यं न सकः ॥ तथागतः मनर्हं स मानः सद्यिश्चाकः ॥ अथि

२ एतद्गुरुं पञ्चतादिर्गुरुं वृद्धं न सत्वं अथः अद्या सद्यं न सकः ॥ एतद्गुरुं पञ्चतादिर्गुरुं वृद्धं न सत्वं अथः
 वृद्धं न सत्वं अथः अद्या सद्यं न सकः ॥ एतद्गुरुं पञ्चतादिर्गुरुं वृद्धं न सत्वं अथः
 पुच्यथः ॥ अद्या सद्यं न सकः ॥ एतद्गुरुं पञ्चतादिर्गुरुं वृद्धं न सत्वं अथः
 अथ नृनिंग नयाचकः ॥ मृदाहि समययाकाः मनमूः किं इत्यगठः स
 र्वं मूर्किं इत्ययनं ॥ न नमूर्दीयकयिगाः ॥ श्रीमामूर्दी सक्तयथकज्ञातः
 आवमननं च नलपिणः ॥ काठुकठयानः सकत्रा मूर्किं इयितः ॥ अति नः
 श्रीमामूर्दी केर्वी नायाव ॥ य ह्ययायमयमहासूया मसर्वं सलवः ॥ अथ
 जी गतावर्णा यमूर्दी समयः ॥ श्रीमावर्जं द्यंथः सितमकिं मयः ॥ महासूवं

श्रीमदुपनिषद् श्रवः ॥ श्रीमाद्यंथः सितमद्रः व
 धिमखूः वृद्धं सलवमखूः सत्वं मखूः म्याक मखूः निवृत्त न स्यात्तां कवृत्ताहि

२ मं कु सखं पलं कानं: दहि मं गि धि य कं: मं कु या यु म् कु यु लि द्या यो न
 स नि ड स ख व: म् मा म् व ल वी ह न क: या गु वा जा ग्य: म् मा म् कु य व ल:
 यि श: न्ति यं थ रि व क: थ य र्च म् मा स क्क य व दि व क गुं थ न जा य व:
 व क्का य: मं कु क न्म: गु नू न् थ य: द ता सि म या र ण व न: म् मिं स नि दि
 ता र व: शि वं न थ य क: गु दि ता सि म या र ण व न म रि म् नि दि ता र
 व: जा य या व क: थू ना का डा द श य क व क्का य: थ न थ का पि न:
 (सि रु ने लू य ॥)

मं कु व धि व क: कुं त न क: म् मिं वा द ठ य: दं क्क ना क्का य क: म् र्ग: म
 श नि क्का य: वि त यू जा: द क्क ना यू जा: थ न: यं र्च म् मा व: व दि व क: म् म
 या क्क व क: म् न व क: न्ति यं थ रि व क: क कि वा वि धि: म्
 र्ग न मा: दं क्क नि व रि म् मा थ न मा जा य: म् क म् नि य: म् मिं यं र्च
 व वि धि मा द: दं क्क नि य रि म् मा थ न: मं कु व वा य: वा क स व व: वि न:
 र्च म् र्च क म् र्ग: म् मा क्क का य व: क्क ना: मं कु व द य क व स थ म् नि न थ य
 व य: मं द न मा: ख ज स: वा क व स स न: क्क ज न: ता क्क या क्क: म् र्ग थ रि थ य न:

दत्त धर्मः यति मा ठ ह्यः पूजा या य रुद्राः वा क प्र स्याः द व नः सि ज न याः
जाति या मा ठ यः रूप नः ज रुद्र य नः यं व न ल त या जः द्य ज न नू र्मि त यः न म्क क
स्थान मा नान का खा य कः धनः सुं चा यः पूजा ह न ज य न यः ग नू र्म द न द
न द नः वि श्व ज नः यं न र्ग वी श्व यः ध म का यः नू र्मि सि त्रि क्क या नं थि यः ध न
सि ध न त य कः श मं ड न थि न कः कृत न कः स ता कृत नः वि श्व ज नः ल ख व मिः
दा या वः पि स्या न ख स वा च क द्वा यः ध न ति स मा धिः कृ सः स म्भ नः पूजा या
च कः द व पूजा य वि मान थ्यः ध नः मं ड न द त सा मं ड न याः ल जी नाः मं ड

न ल जी नाः ठ त मं ड न म र्थीः सा क म्भ नि यः पू र्व व र्ज या निः द कि न्यः व जी उ
धि खः य छि मः स ख च क वं रु निः इ नू नः वि ज्ञा उ धि खः नू र्मिः त जी ना सि न
न न तः वि र्ध स कः वा यू याः वि का वि निः सानाः सि ता ठ य तः च नू द्वा नः व
जा कू दिः को न वूः यू या दि द व ता य वि दि ताः नू त नः स म यः स ल स न स लः
नू वा रु नः छु नू कः मू र्द मं त नः य ति य रु न यू जाः नू ति ॥ ध न य र्थ ग्रा म ॥
उं श म क म्भ नि य र्द स्या रुः उं व र्ज या न य र्द स्या रुः उं व र्ज उ धि ख र्द स्या रुः
उं स ख च क व त नि य र्द स्या रुः उं वि ज्ञा उ धि ख र्द स्या रुः उं त जी ना सि न

है साहाः उँव जविधं सीन है साहाः उँव जवि कविन है साहाः उँ सितां टयत है
रुः उँव जवासा हैः उँव जमाविनीः उँव जगृतहिः उँव जनिस्तुः उँ मनी
रुन नाय साहाः उँ न मायीदसिना हैः उँ सर्वयायविश्वयनि हैः उँ सर्व साकाः
माननियाठ मत हैः उँ गीतं रुक्षिनि हैः उँ सुन गंम हैः उँ गगन गज हैः उँ सु
न कातु हैः उँ नृमं कय हैः उँ चंद चडिय हैः उँ रुदयाव हैः उँ ज्ञानाप्र हैः
उँव जगं रुः उँ नृकय मति हैः उँ यति लान कृत हैः उँ समंत रुद हैः उँव जयूष
हैः उँव जयूष गीः उँव जीवना कृत हैः उँव जगं नृः उँव जी कू सज हैः

उँव जपासदीः उँव जसठ वः उँव जीव स र्हां गाथनः यं कू यरु नय जाः
लासाः यंः सुंठिः गाथनः नृक्षि सः तावनया यः गाथनः यन काः नायः
आकृत आशय सीन तं नृक्षि तावन नं नृमं नृ भवि वं ठ नृमूय स्यः सर्व
यायः रुन २ व ज रुं रुं रुंः उँव ज उँ सर्वयाय है विश्वयन रुं रुंः उँ सर्व कामी
वनन रुक्षिं नृ रुं रुं साहाः उँ रुं विश्वयनि नां स्या वल नानिः
है रुं रुं १॥ उँ रुं विश्वयनि यावन नानि है रुं रुं ॥ उँ ज्ञान स्वकाः
रुन २ आवन नानि है रुं रुं ॥ उँ रुंः सन २ व सन २ आवन नानि है रुं रुं ॥ उँ रुं

जोः साय ध्या ध्या दि यः ने व द्या दि। उ ख र्य नः ॥ नु तिः ॥ यूलं नो ष्म कः
मनि रु ग वान्। स्मो ड च य वि रु व य नः ॥ ध नः रु उ य थाः यूलं नो ष्म कः
॥ यः लाः र्यः वा वः नु तिः ॥ ध नः जा य म नः ॥ ध नः उ ष्म क मनि य र्क रु द्वा ॥
जु र्ध वाः नू का न मू षः य न मं ड धि न कः कुं त न कः ॥ न म ष्म क सिं हा य थ
मं च य य व र्क तः ते ष्म नु यं ज ग म र्वः ते ष्म थ र्य म र्व दू र्जि तिं ॥ न मा र्क य
जो ष्म र्व थ मं थ नु र्म र्ग व क म र्व म र्व रि ता थ यः नू म्मा ठ ता य द म र्क ॥
न मा र्क तः य द्वा ष्म र्व म र्ग व व र्क र्व तः नू म्मा र्क ति म र्व थः थ म्मा र्क तः

यु र्व र्व तः ॥ न म र्कः वि मा र्क र्वः नू म्मा र्व कृ तं म नू थि तः वि मा र्क र्व क
वा ज र्वाः म र्वी नां दू र्व मं त यः ॥ न मा र्क तः जो ष्म र्वः ते ष्म नु यं म र्वः
रु व तः म र्व म र्व र्व नू म्मा र्व दू र्वी क लि थ निः ॥ न मा र्कः थ र्क र्व र्व
विं नां म निः थ र्क र्व न दान न म र्व म र्वी नांः म र्वी मा य वि य न य नः ॥ न मा
र्कः र्क जो ष्म र्वः क र्क य क म र्व दू नः व नू मा र्व व ल र्क र्वीः म र्वी नां वा वि
या य नः ॥ न मा र्क र्क जो ष्म र्वः नू म्मा र्व तं दूः मा र्व न ते ष्म नु यंः ज ग म र्व
थ म्मा र्क र्व य य नः ॥ म र्वी नां मा र्क त थ गी ता न ता द र्वा व नू र्व यः

थंयूजाःथनदशयूजाकथंथंशुगःथनविन्दंथयःत्रुर्हिःशुवाःथि
दसशुवाद्यथनःशुवाःथंथयवकःशुवाःनिथसचयकःत्रुर्हिःशुवा
यूयकः॥थिदंशुयकःधूनकावःत्रुर्हिःयूयकःमंथःत्रुयःमारादानः
इवर्लंशमरावलःत्रुर्लंशंरुवःत्रुलकिननःत्रुलंमाराविमाधनःशुर्दः
शुधनःदिर्वंगतःत्रुमकमःसर्वीयायानःसुखावर्तिःशुर्दः॥दायाव
यूयकःधूनकावःथकाविनमंरुवथिचकःकंठनकःत्रुमिवाद्यःविशा
जनःसर्गःमरानिश्चायकःइजुनायूजाःथनदशुमक्रवशायकःसम

यावकःशनवकः॥त्रुर्हिःत्रुर्हिःयूयकविधिप्रमार्कः॥ ॥
१७००नमःशुगहसाहायमः॥गननंगनपतिर्वेडागठवर्कंनल
मिन्नवनपुर्थहमरुतदौताःनिष्कविमयकः॥रुतवापमादव
का॥अभिधिविनायकः॥शुलागुत्राकसपमः॥दरिभरिपूरय
सपदः॥शुतठमाराकायायकिन्नुवन्नेसमानुधवधसम
नत्रजनकनिफकातधर्तवितमराकातेनमाभिरु॥

